उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब की वादन–शैली : एक अध्ययन

डॉ0 रागनी स्वर्णकार
प्रवक्ता–संगीत विभाग
सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय
कानपुर

सारांश

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब ने अपने अथक परिश्रम व परिस्थितियों से जूझकर संगीत साधना प्राप्त की। उन्होंने अपनी कठोर संगीत साधना के माध्यम से अनेक तन्त्र वाद्यों पर दक्षता प्राप्त की थी जिनमें वॉयलिन व सरोद आपके प्रिय वाद्य थे। वास्तव में उनके द्वारा भारतीय वाद्यों के विकास में दिया गया योगदान अविस्मरणीय है। उनके द्वारा निर्मित नवीन वाद्य, व मैहर वाद्य ग्रन्थ व नवीन वाद्य संगीत जगत के लिए विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। उनकी वादन शैली में आध्यात्मिक पुट था और ये वादन शैली संगीत जगत के लिए विशेष उपलब्धि है।

मुख्य शब्द–वॉयलिन, सरोद, अन्तर्मुखी संगीत, कृन्तन, जमजमा, राग रागिनी, झाला, बोल, आलाप।

बीसवीं शताब्दी के अनेक उच्च स्तर के कलाकारों**– उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, उस्ताद फैय्याज़ खाँ, उस्ताद हाफिज़ अली खाँ, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, उस्ताद अमीर खाँ, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर** व **पं0 ओंकारनाथ ठाकुर** आदि प्रमुख नामों में **उस्ताद अलाउद्दीन खाँ** का नाम भारतीय संगीत के विकास में अद्वितीय एवं अभूतपूर्व रहा है। खाँ साहब ने अपनी कठोर संगीत साधना से संगीत जगत को इतना प्रभावित किया है कि उन्हें वाद्य संगीत का 'युग प्रणेता' भी कहा जाता है। उन्होंने तन्त्र वाद्यों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है। उन्होंने अपनी अथक संगीत साधना से अनेक वाद्य–वॉयलिन, सरोद, रबाब, सुर सिंगार, सुर बहार, क्लारेनेट, कारनेट, शहनाई, पखावज, तबला, बाँगला ढोल आदि पर कुशलता प्राप्त की थी। विशेष रूप से तंत्र वाद्यों के विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है। वॉयलिन और सरोद इनके प्रिय वाद्य रहे। अपनी सृजनात्मक क्षमता से नवीन प्रयोगों के आधार पर वाद्य संगीत के क्षेत्र में परम्परागत सीमित वादन शैली को इन्होंने विस्तृत आयाम प्रदान किया तथा दूसरी ओर संगीत जगत को ऐसे संगीत रत्न प्रदान किये हैं जो वर्तमान समय में भारतीय वाद्य संगीत के प्रकाश पुंज हैं।

खाँ साहब ने अपने जीवन में विभिन्न वाद्य यन्त्रों की शिक्षा प्राप्त की थी, उनमें से वॉयलिन सरोद, सुर सिंगार, सुर बहार, रबाब आदि वाद्यों के कार्यक्रम उन्होंने संगीत सम्मेलनों तथा आकाशवाणी के सम्मेलनों में प्रस्तुत किए थे। बाद में उन्होंने इन वाद्य यंत्रों में अपना मुख्य वाद्य सरोद ही बना लिया था। सभी वाद्यों के वादन में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब की दोनों हाथों की समान तैयारी थी। इस संदर्भ में उनके शिष्य पं0 रविशंकर जी का कथन है– ''बाबा सरोद, वॉयलिन आदि अनेक वाद्यों का वादन बाएँ हाथ से करते तथा तबला वादन दाएँ हाथ से करते थे। बाबा का अपने दोनों हाथों पर समान अधिकार था, ऐसी योग्यता मैंने किसी अन्य व्यक्ति में नहीं देखी।''[1]

उनकी वादन शैली के विषय में पं0 रविशंकर जी का मानना है– ''बाबा की वादन कला में आध्यात्मिक पुट था, उनका संगीत अन्तर्मुखी था।''[2] उनके वादन में बहुत ही सच्चे सुर लगते थे। बचपन से ही मिली संगीत शिक्षा की हर चीज का प्रभाव उनके संगीत में था, उनके वाद्यों जिन्हें उन्होंने सीखा था उन सबकी विशेषताओं को उन्होंने अपनी वादन शैली में समायोजित कर लिया था और इस तरह उनकी वादन शैली सशक्त और समृद्धशाली हो गयी थी। सरोद जैसे वाद्य में कृन्तन, जमजमा आदि का सहज प्रयोग खाँ साहब के अत्यधिक अभ्यास का ही फल है। लय पर बाबा का पूर्ण अधिकार था। सिखाते समय वह आलाप को बहुत महत्व देते थे तथा प्रचलित परम्परागत नौ रसों के बारे में भी शिष्यों को अवगत कराते थे।

"He attached the greatest importance to alap. While imparting training in this he introduced his students to the Nine sentiments (Nava Rasas)..... The alap therefore was the embodiment of Karuna (Pathos and Compassion)....."[3]

वॉयलिन वादक श्री रॉबिन घोष के भी बाबा के वादन शैली के विषय में विचार इस प्रकार हैं– ''बाबा के वादन में राग प्रस्तुतीकरण में गहराई होती थी। राग की शुद्धता पर वे विशेष ध्यान देते थे, वे एक ही राग को घंटों बजाते थे। बाबा का संगीत का अभ्यास विलक्षण था, उनका संगीत अन्तर्मुखी था, आध्यात्मिक था.....।''[4]

बाबा की वादन शैली के विषय में सम्माननीय श्री एस0डी0 डेविड जी जो कि मैहर म्यूजिक कॉलेज के प्राचार्य रहे ने भी कहा है–

"He used to produce extra ordinary combinations of 'Bols' by his left hand with the help of 'Jawa' Thrilling his audience in his 'Jhala' display and in the 'laya' of 'Drut' he used to combine the 'Bols' of Mridanga with excellent combination were supposed to be the most difficult on an instrument like Sarod....."[5]

4 से 7 अप्रैल 1952 में नई दिल्ली में विराट संगीत समारोह हुआ था, जिसके अन्तर्गत 7 अप्रैल को उस्ताद अलाउद्दीन उनके पुत्र श्री अली अकबर खाँ का सरोद तथा पंडित रविशंकर जी का सितार वादन एक साथ हुआ, तबले पर थे श्री कंठे महाराज व उनके भतीजे श्री किशन महाराज। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की इतनी वृद्धावस्था में भी ऐसी तैयारी देखकर आश्चर्य हो रहा था। कंठे महाराज तथा अलाउद्दीन खाँ साहब के जवाब–सवाल से श्रोतागण प्रभावित होकर आनन्द विभोर होते देखे गये। पाँचों कलाकारों ने अपनी उत्कृष्ट कला का परिचय दिया। अलाउद्दीन खाँ व श्री कंठे महाराज का लय के साथ खेलना दर्शनीय था।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ साहब के सन् 1950 से 1960 तक के राष्ट्रीय कार्यक्रमों की समीक्षा से भी उनकी वादन शैली ज्ञात होती है–

''1 दिसम्बर 1952 को रेडियो पर मैहर के उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, उनके सुपुत्र श्री अली अकबर खाँ एवं उनके पौत्र श्री आशीष खाँ ने सरोद पर जुगलबंदी प्रस्तुत की। तबले की संगत के लिए बनारस के पंडित अनोखे लाल व श्री अल्लारक्खा की घोषणा की गयी। रात्रि एक बजकर तीस मिनट पर यह कार्यक्रम खाँ साहब द्वारा ही रचित राग 'हेम विहाग' के अलाप से प्रारम्भ हुआ। रात्रि के सवा दो बजे तक इनका आलाप चलता रहा। इसके बाद विलम्बित गत आरम्भ हुई। लय का सच्चा और वास्तविक चमत्कार सुनने को मिल रहा था। आलाप में खाँ साहब ने 'सीताराम– सीताराम, अल्लाह–अल्लाह' मुँह से बोलकर फिर उसे सरोद पर स्वरों द्वारा ऐसे व्यक्त किया, उससे हृदय उस्ताद की साधना की ओर एकदम आकृष्ट हो गया....।''[6]

अलाउद्दीन खाँ ऐसे कलाकार हुए जिन्होंने कला का प्रत्यक्ष सम्बन्ध आत्मा से सम्बद्ध किया। उनकी वादन शैली में विनम्रता का एक स्वर है जो स्वयं सबकी रूह में प्रवेश कर जाता है। वह एक निस्संग कलाकार हैं जिन्होंने वास्तविक रूप से अपनी कला की पवित्रता को अपनी वादन शैली में बनाये रखा और वह शाश्वत है। उनके वादन में इतनी गहराई होती थी कि उसको गुणी श्रोता ही समझ सकते थे। उन्होंने सरोद वादन में कृन्तन, जमजमे के प्रयोग को बहुत विकसित किया तथा ताल और लय पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनको रागों का इतना गहराई से ज्ञान था कि उनको राग–रहस्य का उस्ताद कहा जा सकता है। विद्वानों के विचारों, विभिन्न समीक्षाओ तथा खाँ साहब के रिकार्ड्स के आधार पर उनकी वादन शैली की विशेषताओं के बारे में यह कहा जा सकता है कि उनके वादन में भाव पक्ष व कला पक्ष दोनों का उचित समन्वय देखने को मिलता है। उनके वादन में भावपूर्ण आलाप की विशिष्टता है। स्वर विस्तार में विविध प्रकार के अलंकार व अनूठे स्वर संयोजन की योजना उनकी मौलिक कल्पना शक्ति का ही फल है। राग प्रस्तुतीकरण में राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान देते हुए खाँ साहब राग की गहराई में जाकर उसे प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते थे जिससे राग का मूर्त रूप स्पष्ट हो जाता था। वस्तुतः राग की शुद्धता बनाये रखने की दृष्टि से वे एक कठोर अनुशासक थे। सरोद वादन में जवा का दमदार व पुष्ट लगाव तथा सरोद जैसे सारिकाविहीन वाद्य पर अतिद्रुतलय की मींड, कृन्तन, जमजमे व गमक का सहजतापूर्ण प्रयोग खाँ साहब की वादन शैली की विशेषता है।

संदर्भ–

1. डॉ0 प्रभा जैन–*भारतीय संगीत के उन्नायक, 'उस्ताद अलाउद्दीन खाँ',* पृ0 95
2. वही, पृ0 95
3. जोतिन भट्टाचार्या–*उस्ताद अलाउद्दीन खाँ एण्ड हिज म्यूजिक,* पृ0 134–135
4. डॉ0 प्रभा जैन–*भारतीय संगीत के उन्नायक, 'उस्ताद अलाउद्दीन खाँ',* पृ0 96
5. वही, पृ0 96
6. वही, पृ0 97